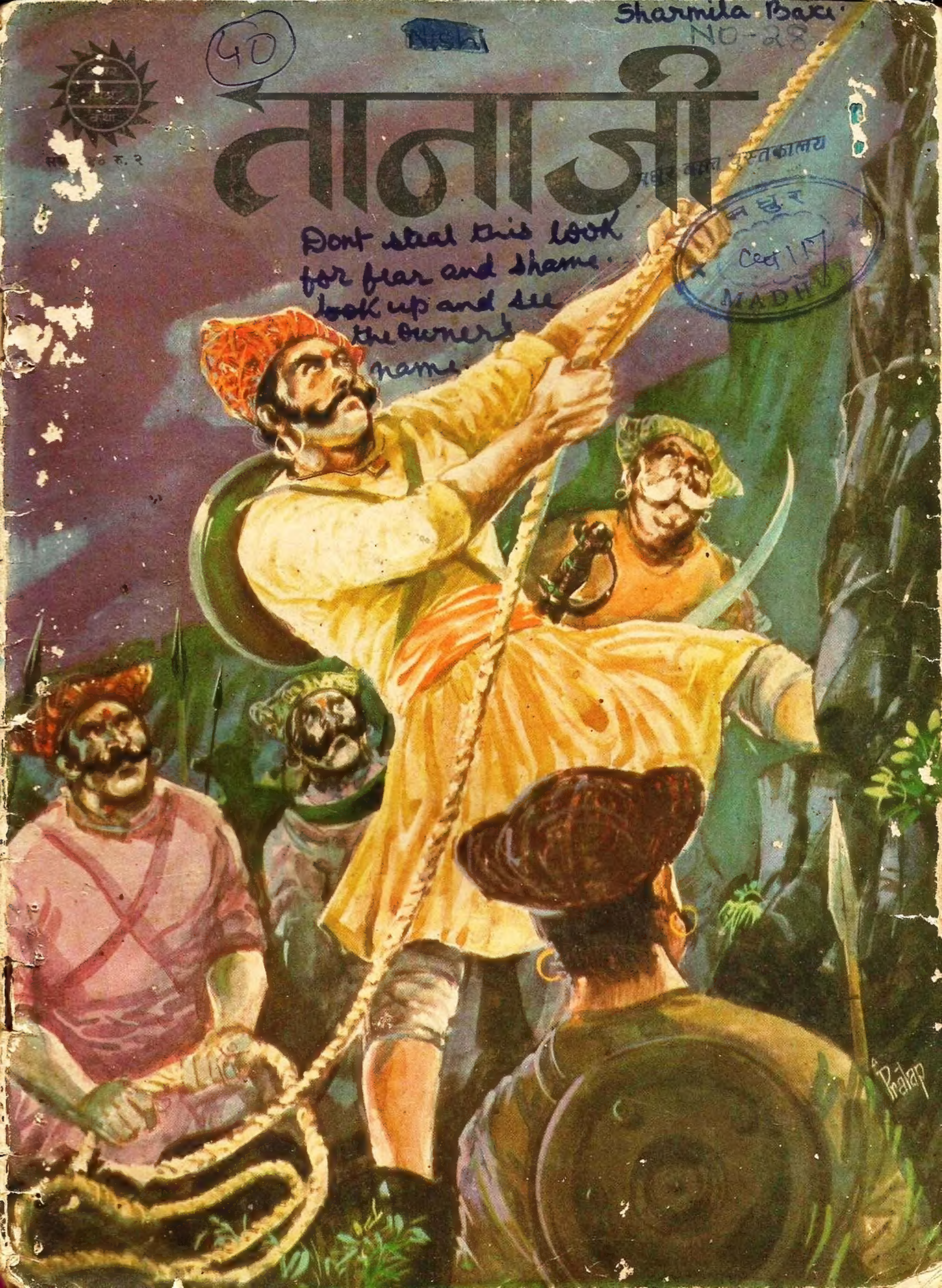


Sharmila Baxi
NO-28
40
तानाजी
Dont steal this book
for fear and shame.
look up and see
the owner's
name.
Pratap

मराठों का इतिहास वीरता और साहस की गाथाओं से भरा पड़ा है। तानाजी उन्हीं मराठा शूरवीरों में से थे—और वे मराठों के प्रारम्भिक काल में धूमकेतु के समान चमके थे।

तानाजी और शिवाजी बचपन के मित्र थे और दोनों को एक ही लगन थी। शिवाजी ने प्रारम्भ के दिनों में खतरे के जितने भी कामों में हाथ डाला, सब में तानाजी ने कंधे से कंधा भिड़ा कर उनका साथ दिया।

कोण्डाना पर चढ़ना सहज नहीं था। दुर्ग पर कड़ा पहरा था और इसमें प्रवेश करने का एक ही मार्ग था जो ऐसी सीधी पहाड़ी पर था जिस पर चढ़ना असम्भव माना जाता था। महान् इतिहासकार, सर एच. जी. रॉलिन्सन ने लिखा है कि "यह ऐसा कार्य था जिसे सफलतापूर्वक पूरा करने की आशा कदाचित् संसार भर के सैनिकों में केवल मावला ही कर सकते थे।"

पूना के निकट स्थित सिंहगढ़ इस महान् सेनानी का जीता-जागता स्मारक है।

प्रस्तुत रचना मुख्यतया एच. जी. रॉलिन्सन की "शिवाजी, दि मराठा, हिज़ लाइफ़ एण्ड़ टाइम्स" तथा जी. एस. सरदेसाई की "शिव संस्मृति" पर आधारित है।

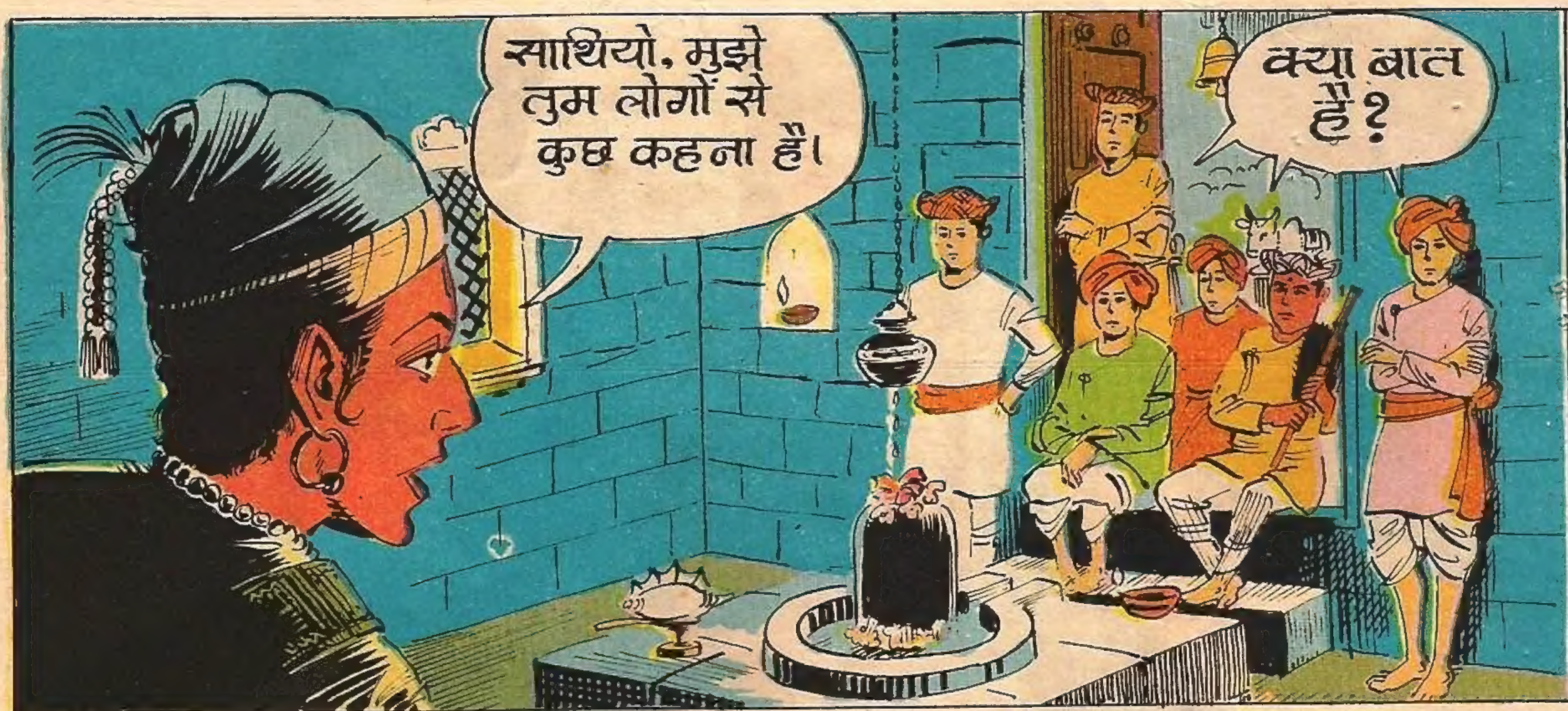
"Paper used for the printing of this book was made available by the Government of India at concessional rates."

Printed by H. K. Nasta at IBH Printers, Marol Naka, Mathuradas Vissanji Road, Andheri East, Bombay-400 059 and published by H. G. Mirchandani, for India Book House Education Trust, 29, Wodehouse Road, Bombay-400039.

Editor: Anant Pai Written by : Meena Talim Illustrated by : V.B. Halbe



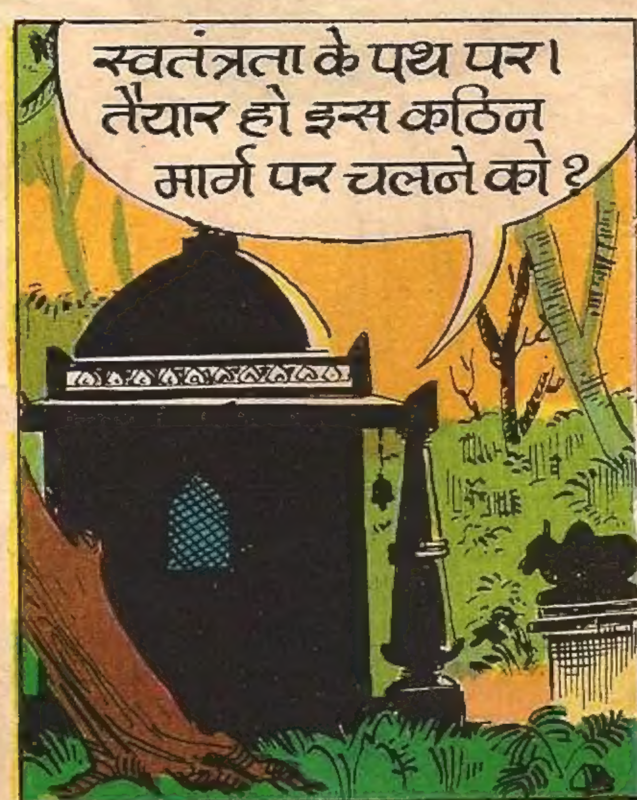
सन् १६४५ में शिवाजी और उनके साथी महाराष्ट्र के रायरेश्वर मन्दिर में एकत्रित हुए।


साथियो, मुझे तुम लोगों से कुछ कहना है।
क्या बात है?

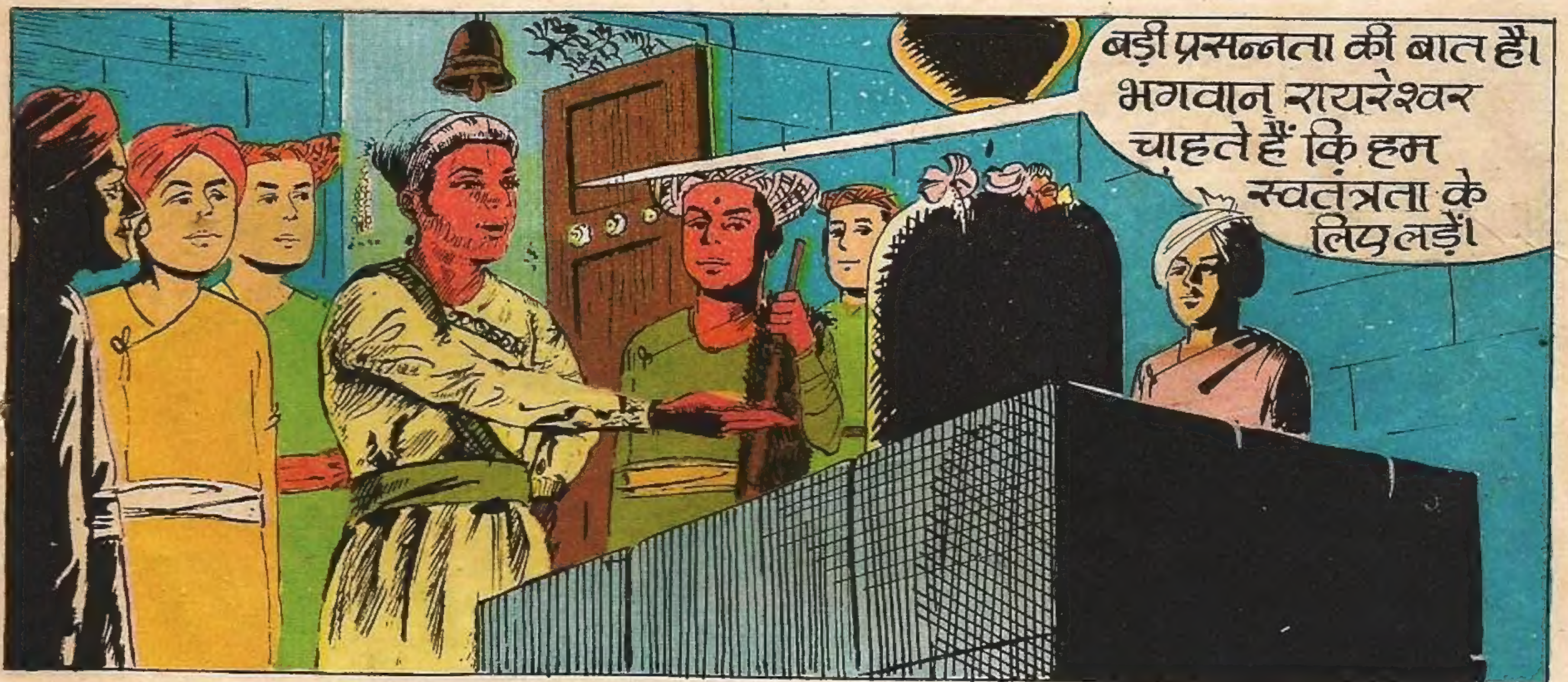

सुलतान के अधीन सरदारों के रूप में हमारी स्थिति दासों जैसी है।


है तो। परन्तु इसका कोई उपाय?


अवश्य-यदि तुम लोग मेरे साथ आओ।
कहाँ?


स्वतंत्रता के पथ पर। तैयार हो इस कठिन मार्ग पर चलने को?


हम इस उद्देश्य के लिए अपनी जान भी देने को तैयार हैं।
हम सब तुम्हारे साथ हैं।


बड़ी प्रसन्नता की बात है। भगवान् रायरेश्वर चाहते हैं कि हम स्वतंत्रता के लिए लड़ें।


आओ, हम सब स्वतंत्रता की शपथ लें।
अवश्य!


भगवान् रायरेश्वर, मैं बाजी पुसालकर, स्वतंत्रता की शपथ लेता हूँ। स्वतंत्रता मिलने तक चैन से नहीं बैठूँगा।


भगवान् रायरेश्वर, मैं विठोजी शिर्के, स्वतंत्रता मिलने तक चैन से नहीं बैठूँगा।


मैं, तानाजी मालुसरे, स्वतंत्रता मिलने तक चैन से नहीं बैठूँगा।


फिर-पूना के लाल महल में–
माँ साहब, ये मेरे साथी हैं। जिन्होंने स्वतंत्रता की शपथ ली है।
भगवान् रायरेश्वर तुम पर कृपा करें।


मेरे बच्चो, शत्रु का सामना करने के लिए तुम्हें अस्त्र-शस्त्र चलाने में कुशलता प्राप्त करनी होगी।
...और गुरिल्ला-युध्द में भी।

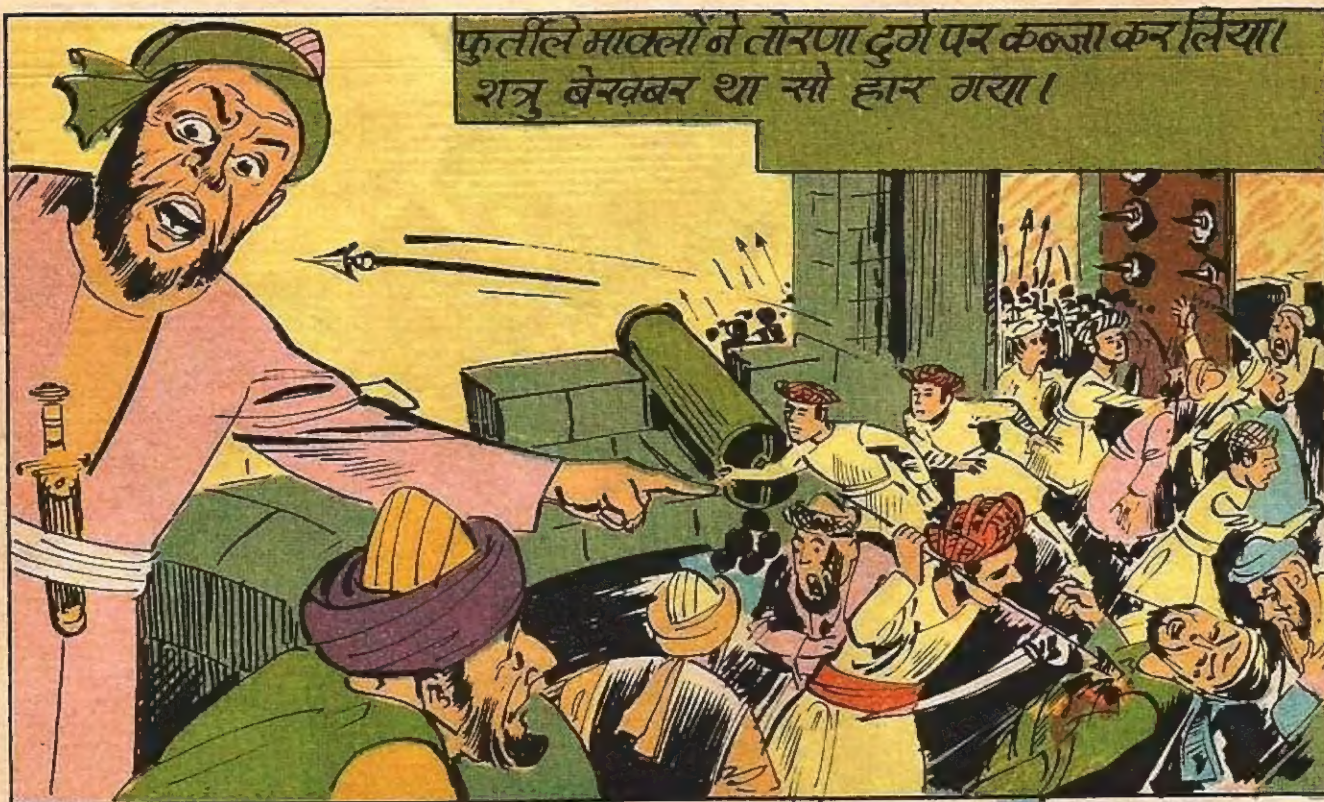

तुम्हारे दृढ़ संकल्प से मुझे विश्वास है कि विजय तुम्हारी होगी।

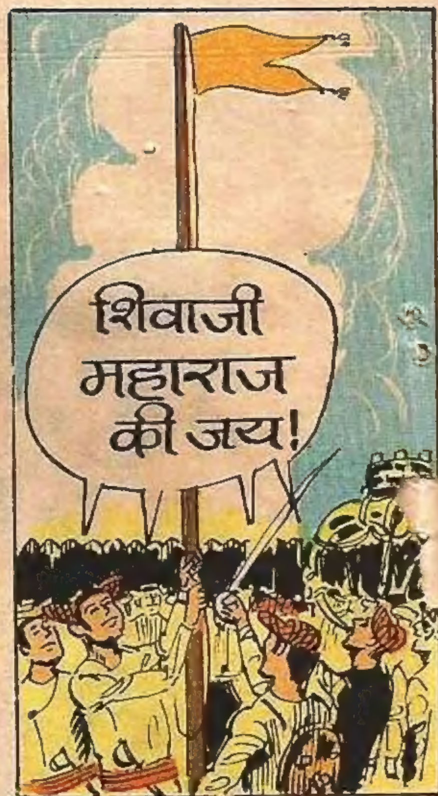

कई महीने तक उन्होंने अभ्यास किया
राजे, अब हमें अपना अभियान शुरू करना चाहिए।


एक दिन-
पहाड़ी क़िले जिसके हाथ में होंगे, वही इस प्रदेश पर शासन करेगा।


राजे, हमें तोरणा का क़िला फ़तह करना चाहिए।


परन्तु, हमारे पास यथेष्ट सैनिक नहीं।
देवी भवानी हमारे साथ हैं, राजे!


फुर्तीले मावलों ने तोरणा दुर्ग पर कब्जा कर लिया। शत्रु बेखबर था सो हार गया।


शिवाजी महाराज की जय!


शिवाजी ने तानाजी की सहायता से कोण्डाना, पुरन्दर तथा प्रतापगढ़ के दुर्ग जीत लिये।


दिल्ली में -
आलमगीर, बीजापुर के आदिल-शाह ने शिवाजी के सामने हथियार डाल दिये। अब हमारे इलाक़े पर छापे पड़ रहे हैं।
वह पहाड़ी चूहा!


शिवाजी की
यह हिम्मत!
शाइस्ता खाँ को
हाज़िर करो!


आलमगीर,
आपने मुझे याद
फ़रमाया ?


तुम्हें दक्खन जा कर
शिवाजी को कुचलना
होगा!
आपका हुक्म
सिर-आँखों पर,
आलमगीर!


तुम्हें मालूम होगा
कि आदिलशाह
कामयाब नहीं
हुआ।
मेरे साथ
ऐसा नहीं
होगा।


तुम बहादुर हो और होशियार भी।
मैं आपके नाम पर बट्टा नहीं लगने दूँगा!


ठीक है। ७५,००० घुड़सवार ले जाओ। होशियार रहना – काफ़िर बड़ा चालाक है।


आलमगीर बेफ़िक्र रहें।


उधर शिवाजी के डेरे पर –
राजे, बड़ी लज्जा की बात है कि मुग़लों ने तुम्हारे लाल महल पर अधिकार कर रखा है।


परन्तु बहुत दिन नहीं रहेगा। धीरज रखो।


कुछ देर बाद–
राजे, निकट के गाँव का पाटिल भेंट करने आया है।
अन्दर भेज दो।


महाराज, हमारी रक्षा कीजिये! मुग़लों ने हमारा गाँव, पशु, खेत सब लूट लिये।


अब भी धीरज रखने को कहते हो?


हमें आप ही का भरोसा है, महाराज!
चिन्ता मत करो – तुम्हारा सब-कुछ तुम्हें वापस मिल जायेगा!


आज रात आना! हम योजना बनायेंगे।


कुछ दिनों बाद पूना के निकट –
मशालें बुझा दो – तानाजी के आने का इंतजार करो।


बाद में –


आओ, तानाजी।
राजे, तानाजी आ गये।


अनुमति मिली?
हाँ – केवल ६0 आदमियों की।


कोई बात नहीं। बाक़ी लोग संकेत की प्रतीक्षा करें।


घण्टे भर में ६० आदमियों की बरात के जुलूस ने पूना नगर में प्रवेश किया।


जैसे ही जुलूस लाल महल पहुँचा-
मशालें बुझा कर अन्दर चलो।


साठों आदमी लाल महल के अन्दर चले गये।
तौबा - तौबा! काफ़िर आ गया!


बेगम, हम फँस गये।

शिवाजी के कक्ष में प्रवेश करते ही –

मुझे बेवा मत करो! मेरे खाविन्द की जान मत लो।








मुग़ल सिपाहियों ने मराठों का पीछा किया।


बहुत देर में उन्हें भान हुआ कि उनके साथ चाल की गयी है।
उफ़! काफ़िरों ने हमें बेवकूफ़ बनाया!
अपने मवेशियों के सींगों से मशालें बाँध कर!


पूना फिर से शिवाजी के हाथ आ गया — परन्तु —
कोण्डाना वापस मुग़लों के अधिकार में चला गया है।
इस ख़्याल से जीजाबाई को दुःख हुआ।


उन्होंने अपने एक विश्वस्त व्यक्ति को बुला भेजा।
रायगढ़ जा कर अपने राजे से कहना कि आ कर मुझसे मिले।


रायगढ़ में—
माँ साहब ने आपको तुरन्त बुलाया है।
क्या बात है जो इतनी शीघ्रता से आये ?


शिवाजी तुरन्त घोड़े पर सवार हो कर प्रतापगढ़ पहुँचे।


प्रतापगढ़ में
आओ, शिवबा – तुम्हारे साथ पासा खेलूँगी।
आज यह अनोखी बात क्यों ? कुछ और कारण है–
जैसी तुम्हारी इच्छा माँ साहब।


माता भवानी मुझे विजयी करें।
शिवबा, खेल तुम शुरू करो।
अच्छी बात, माँ साहब।


ओः। दो आया! अब मेरी बारी है।
हाँ, माँ साहब।


छः आया! मैं जीती।
तुम जो माँगो वही दूँगा–अपने २९ दुर्ग भी।


मुझे ये २९ नहीं चाहिएँ। मुझे कोण्डाना दो!


कोण्डाना! परन्तु उसकी रक्षा तो उदयभानु राठौड़ और उसके पुत्र कर रहे हैं।
तो क्या हुआ?


उनके पास अरब हैं, अफ़ग़ान हैं, पठान हैं, राजपूत हैं – और चन्द्रवल्ली भी।
चन्द्रवल्ली? यह क्या है?


मस्त हथिनी है जो मनुष्यों को कुचल डालती है।
अच्छा!


भवानी की कृपा से कोई शक्ति तुम्हें नहीं रोक सकेगी। जाओ और वह दुर्ग जीतो।
जैसी माँ साहब की आज्ञा!


अगले दिन सुबह
आओ, शिवबा।
माँ साहब, मैं सारी रात विचार करता रहा।


किस निर्णय पर पहुँचे ?
केवल एक व्यक्ति यह काम कर सकता है।


कौन है वह ?
तानाजी मालुसरे।


वह इस समय कहाँ है?
अपने पुत्र के विवाह के लिए उमराठ में। मैंने बुलवाया है।


एक दूत तानाजी को लाने के लिए तुरन्त चल दिया।


उमराठा में-
प्रसन्न हो न! सुन्दर बहू मिल रही है।
बहू रायबा को अवश्य प्रसन्न रखेगी।


तुम यहाँ हो। मैं तुम्हें खोज रहा था।
आओ, सूर्याजी। क्या बात है?


रायगढ़ से
पत्र आया है।
क्या लिखा
है?


जीजामाता ने तुरन्त
रायगढ़
बुलाया है!


परन्तु
कल तो विवाह
है!


विवाह रुक
सकता है।


अपने नेता तथा देश
के प्रति मेरा कर्त्तव्य
पहले है।


तुम चिन्ता क्यों करती हो ? सूर्याजी मेरे साथ हैं और शेलार मामा भी साथ जायेंगे।


रायगढ़ में —
राजे, तानाजी व उनके साथी आ गये।
उन्हें भेज दो।


देवी भवानी तुम्हें चिरायु करें।


उमराठा में सब ठीक-ठाक है?
भवानी की कृपा है।


माँ साहब, इन्हें बताओ कि क्यों इतनी शीघ्रता से बुलाया है।


तानाजी, मैं एक कठिन कार्य तुम्हें सौंप रही हूँ।
आपके आशीर्वाद से सहज हो जायेगा।


सुना है, तुम्हारे पुत्र का विवाह है और –
वह रुक सकता है, माँ साहब।


पहले कर्त्तव्य है।


कोण्डाना के दुर्ग पर अब भी शत्रु का झंडा फहरा रहा है।


बहुत दिन नहीं फहरायेगा, माँ साहब।


मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। शिवबा, तानाजी के सहयोग से योजना तैयार करो।


कार्य अत्यन्त कठिन है ---


--- दुर्ग पर पठानों और अरबों का ज़बर्दस्त पहरा है।
परन्तु तीन ओर ही है।

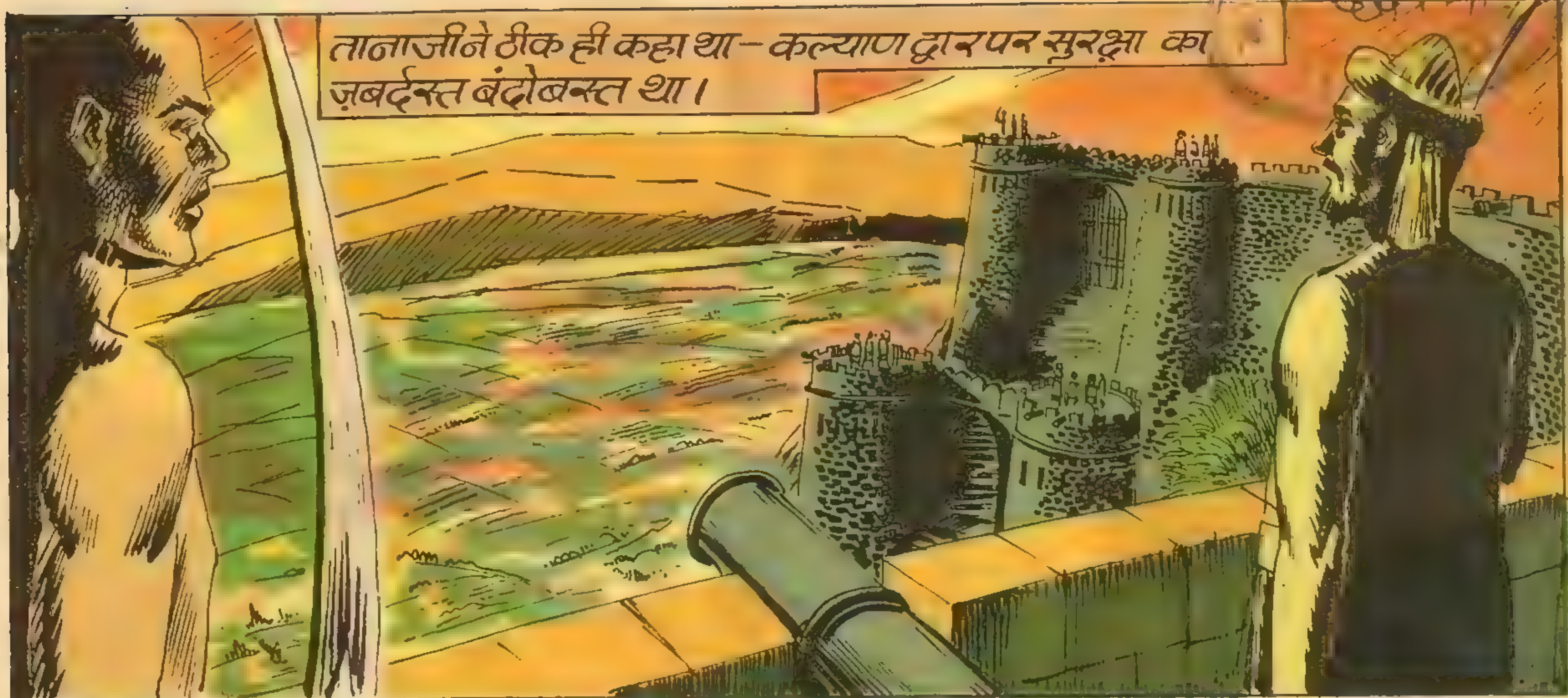

क्या मतलब तुम्हारा?
पश्चिम की ओर पहरा नहीं है।


उधर तो खड़ी पहाड़ी है।
एक दम सीधी! वही मार्ग है हमारे लिए।


तुम कहना क्या चाहते हो ?


रात को हम उधर से चढ़ेंगे और सामने से सूर्याजी कल्याण द्वार पर आक्रमण करेंगे।
हूँऊँऊँ—


रात को यदि शत्रु असावधान हुआ तो,राजे, हमारी योजना सफल हो कर रहेगी।
माता भवानी तुम्हारी सहाय हों।



परन्तु पहाड़ी की ओर कोई उन्हें रोकने वाला न था। उसी रात —

गोह कहाँ है?

यशवन्ती गोह यहाँ है, स्वामी।

यशवन्ती, मैं तुम्हें ऊपर फेंकूँगा – हमें ऊपर पहुँचाना।

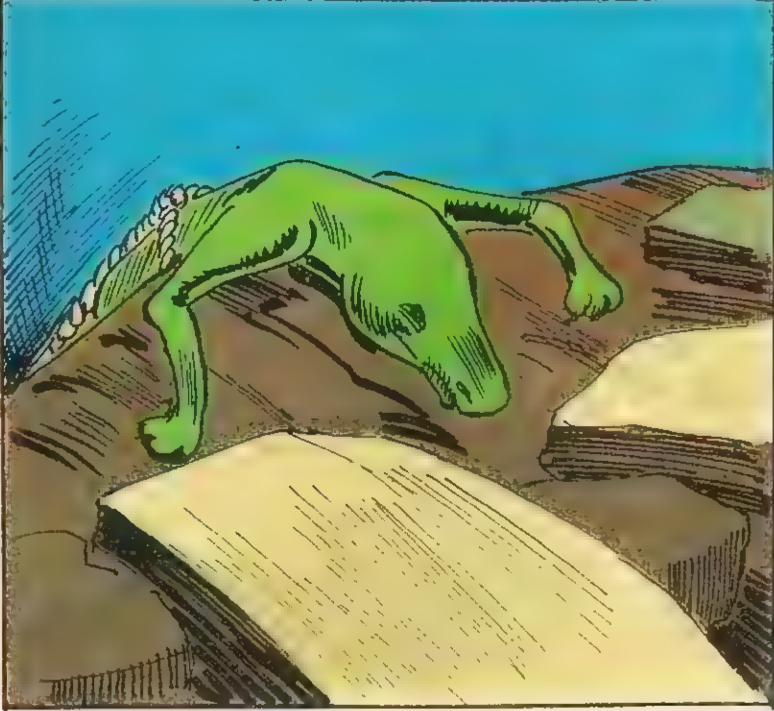

उन्होंने यशवन्ती को फेंका परन्तु वह नीचे फिसल गयी।
सामने पराजय है और मृत्यु!


मृत्यु? सम्भव है। पराजय- सर्वथा असम्भव है।
स्वामी, यह अपशकुन है।


नासमझ मत बनो। यह पशु है, दैवी शक्ति नहीं।


तूने काम पूरा नहीं किया तो तेरे टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।

उन्होंने गोह को फिर फेंका और वह कड़ी चट्टान से चिपक गयी।



साथियो, मैं पहले ऊपर जाता हूँ। तुम लोगों के लिए रस्से लटकाऊँगा। चलो विजय के पथ पर!



बाद में—

हर हर महादेव!

इस प्रकार मावलोंने दुर्ग में प्रवेश कर के असावधान शत्रु पर आक्रमण कर दिया।



उदयभानु भी सो रहा था।







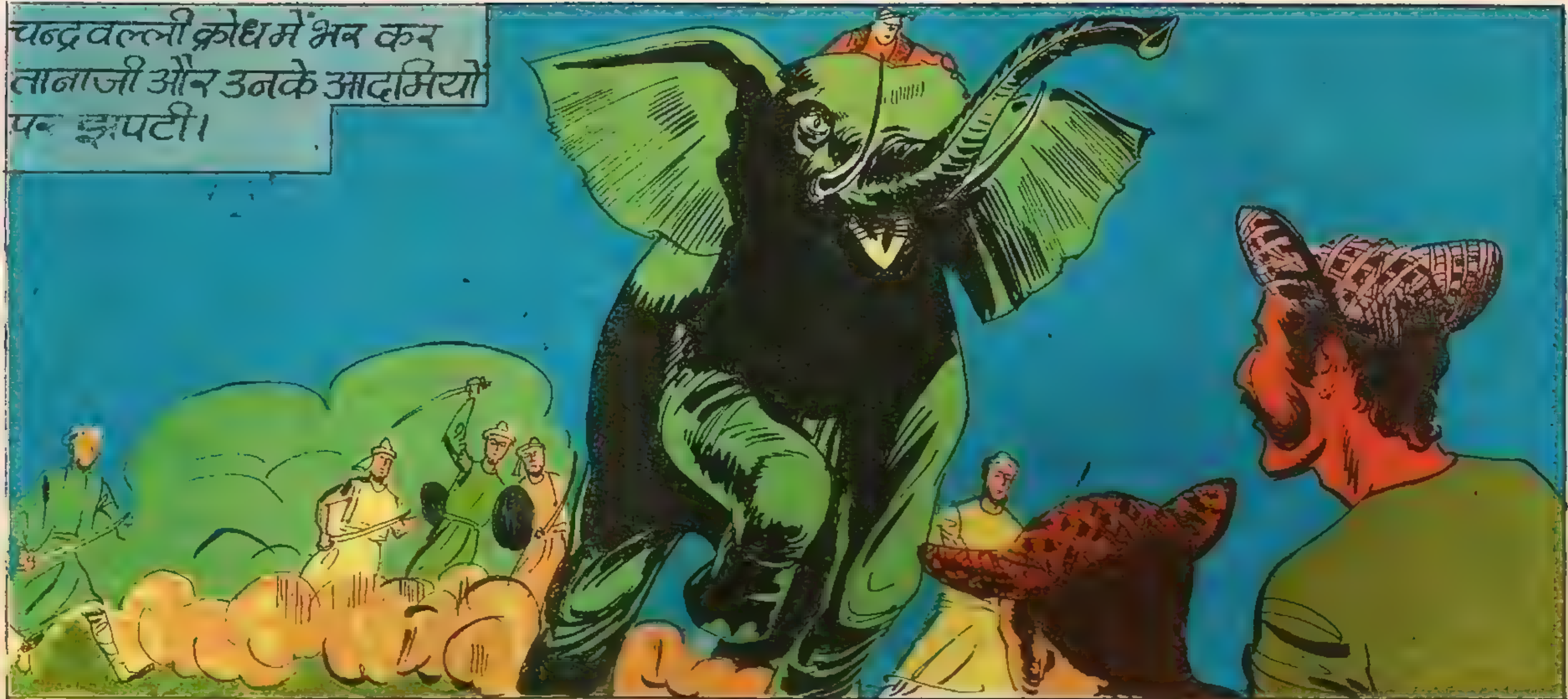

माजरा क्या है ?
हम मर गये !


क्या बात है ?
हथिनी को कुछ खिला दिया गया है।


अंकुश मारो !
फिर देखो...


हो गयी तैयार ! काफ़िरों का कीड़े-मकोड़ों की तरह कचूमर निकाल देगी !


शुक्र है खुदा का !


चन्द्रवल्ली क्रोध में भर कर तानाजी और उनके आदमियों पर झपटी।


तुम इसके पहले शिकार हो।


हुज़ूर, चन्द्रवल्ली मारी गयी।
मेरे बेटे उन्हें भेड़-बकरियों की तरह मार भगायेंगे।

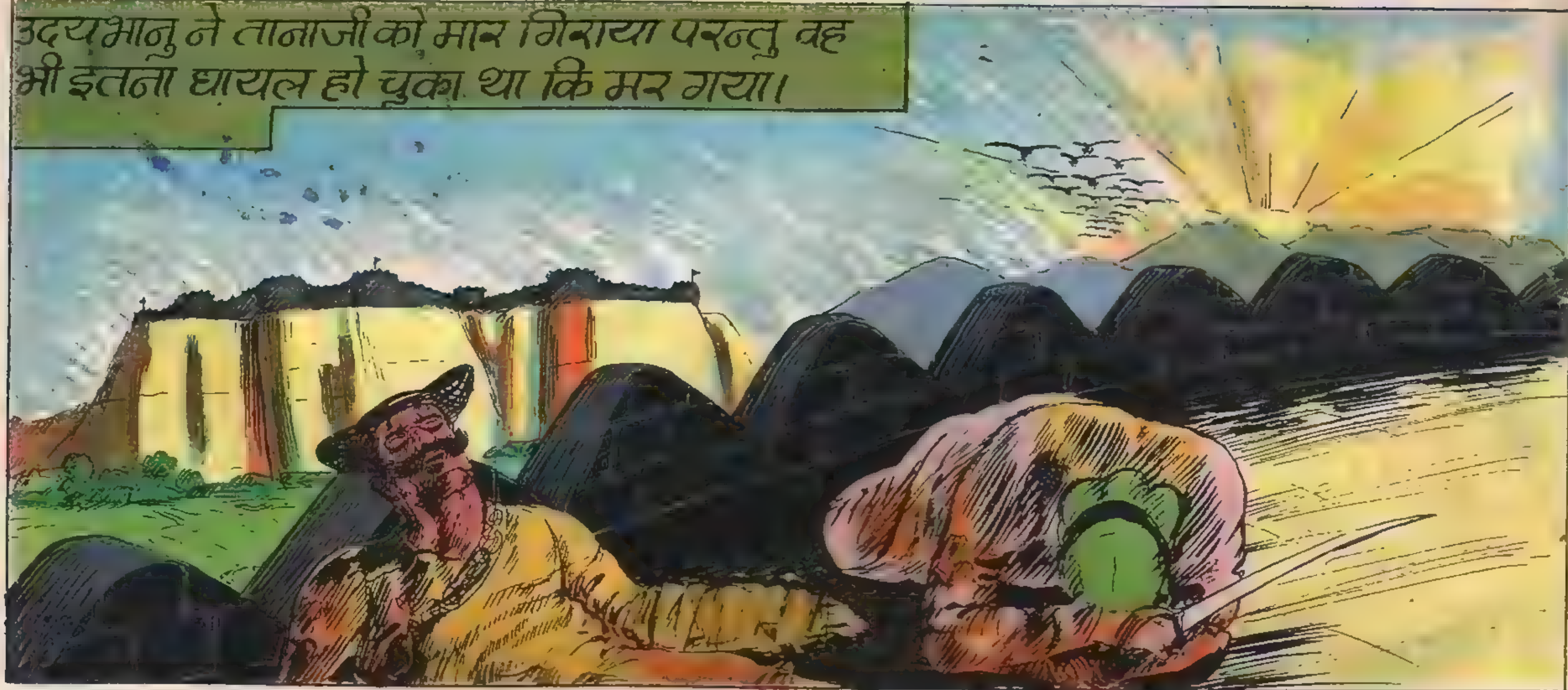

अरब कुछ देर बाद फिर आया—
उन्होंने आपके बेटों को भी मार डाला, हुज़ूर।
मेरे बेटों को? मार दिया? लाओ मेरी तलवार!


वह तानाजी पर टूट पड़ा। दोनों जम कर लड़ने लगे।


जय भवानी!


दोनों ही तलवार के धनी थे—खूब लड़े।


अन्त में—


उदयभानु ने तानाजी को मार गिराया परन्तु वह भी इतना घायल हो चुका था कि मर गया।


इस बीच सूर्याजी ने कल्याण द्वार खोल दिया और उनके सैनिक अन्दर घुस आये।


खेद है–हमारे स्वामी नहीं रहे।
तो हम भाग निकलें।

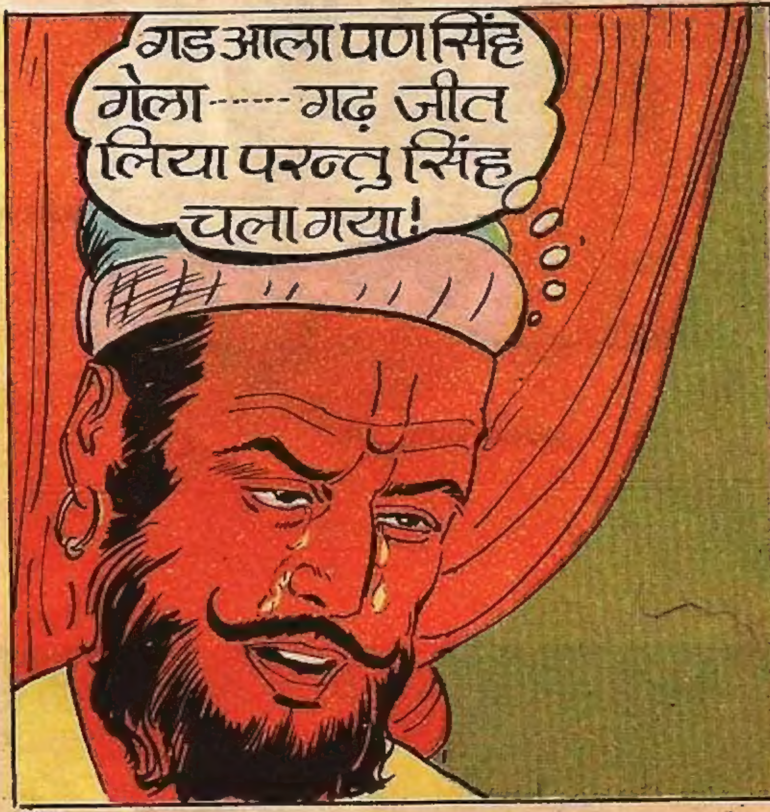

इन्हें देखो–लड़ते-लड़ते जूझ गये! हम भी जान की बाज़ी लगा दें।
हर हर महादेव!


घमासान युध्द के बाद उन्होंने कोण्डाना दुर्ग जीत लिया।

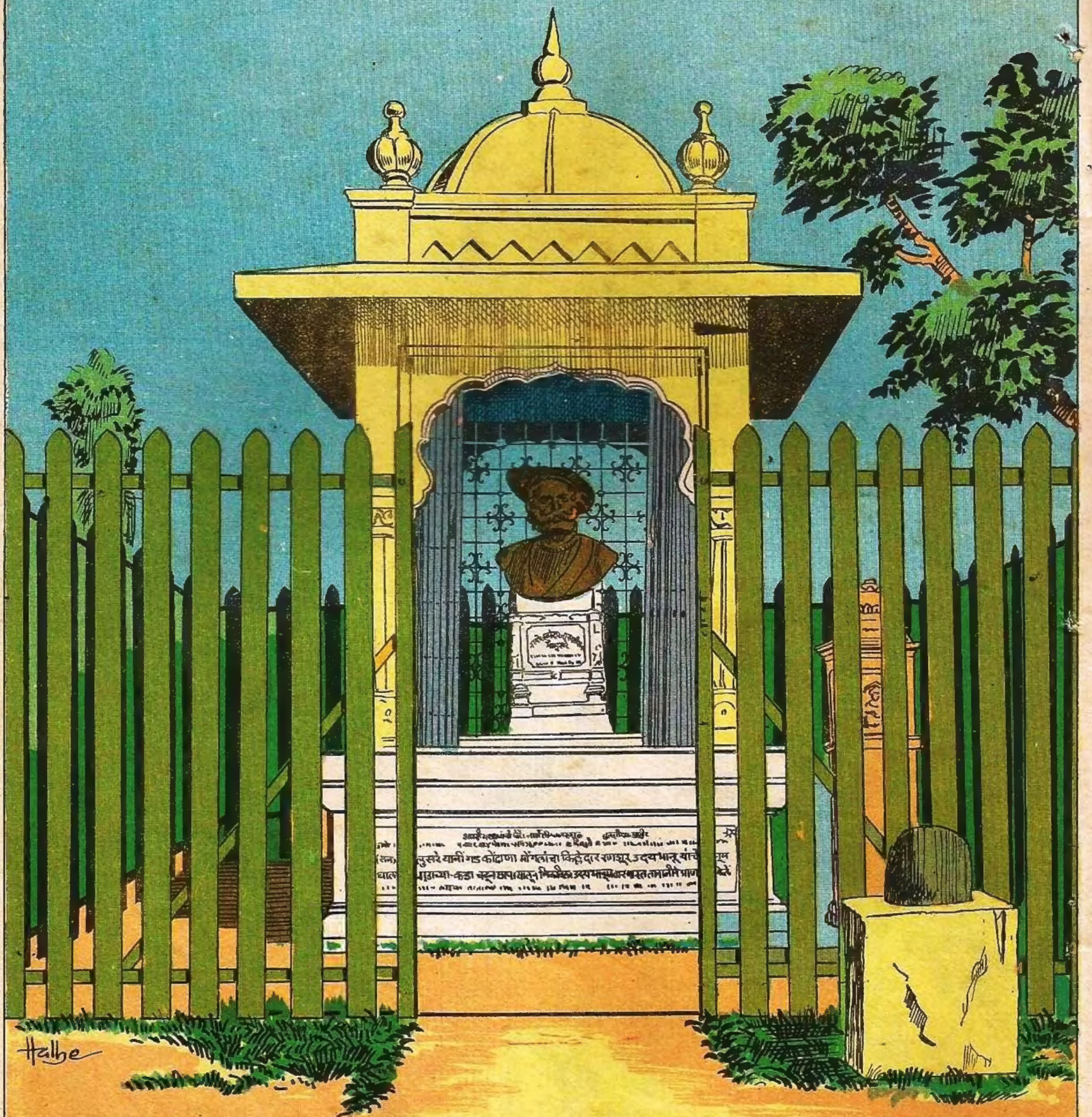

रायगढ़ में -
राजे, हम जीत गये।
फिर उदास क्यों हो, सूर्याजी?


राजे, तानाजी हमें छोड़ गये!
ओः - मेरी दाहिनी भुजा आज जाती रही!


सूर्याजी, रायबा के विवाह की व्यवस्था करो।


गड आला पण सिंह गेला ----- गढ़ जीत लिया परन्तु सिंह चला गया!

सिंह की स्मृति अमर रखने के लिए कोण्डाना का नया नाम रखा गया – **सिंहगढ**



सिंहगढ में उस स्थान पर जहाँ तानाजी गिरे थे, शिवाजी ने उनका स्मारक बनवाया। वह आज तक **'वीरासन'** कहलाता है।